राज्य परिशिष्ट 9

[यीशु मसीह के दृष्टान्त]

माँगने वाला पुत्र

मत्ती 7:7–12 और लूका 11:9–13 में "माँगने वाले पुत्र का दृष्टान्त"

परमेश्वर के राज्य में सहज और निरन्तर आग्रह करने वाली प्रार्थना के विषय में हैं।

पढ़ें मत्ती 7:7–12 और लूका 11:9–13

---

1. **दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।**

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

इस दृष्टान्त की कहानी एक प्रश्न के रूप में है। जब बच्चे अपने पिता से अच्छी वस्तुएँ माँगते हैं, तो सांसारिक पिता कभी उन्हें बुरी वस्तुएँ नहीं देंगे! हालाँकि सांसारिक पिता निश्चित रूप से परिपूर्ण नहीं होते हैं, यहाँ तक कि वे पापी और कभी–कभी बुरे भी होते हैं, फिर भी वे अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना जानते हैं! मत्ती में, यीशु रोटी और पत्थर, मछली और साँप की बात करते हैं, लूका में वह मछली और साँप, अण्डे और एक बिच्छू के विषय में बताते हैं। कहानी के इन सभी तत्वों को आसानी से समझा जा सकता है।

---

2. **संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।**

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

लूका 11 में लिखी हुई पुत्र द्वारा माँगे जाने की परिस्थिति, कहानी, व्याख्या या अनुप्रयोग मत्ती 7 में लिखे हुए उसी दृष्टान्त से अलग है। ये यह दर्शाता है कि यीशु ने एक ही सत्य को अलग–अलग परिस्थितियों में एक से अधिक बार बताया, जैसे आज के शिक्षक करते हैं।

(1) **इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 5–7 में पायी जाती है।**

इसमें पर्वत पर दिए गए उपदेशों का उल्लेख है जो धार्मिकता के साथ जीवन को जीने के तरीके की माँग करता है। ये माँगें आसान नहीं हैं। परमेश्वर के बिना, उसके राज्य के अधिकारी, राज्य की आवश्यकताओं को

पूरा नहीं कर सकते। इसलिए, यीशु ने शिक्षाओं को सुननेवाले लोगों से यह आग्रह किया कि वे ईमानदारी से प्रार्थना करना जारी रखें। यीशु ने उन्हें माँगना, ढूँढ़ना और खटखटाना सिखाया। लेकिन प्रत्येक शिक्षा का अर्थ उसकी पिछली शिक्षा के अर्थ से अधिक है।

माँगने का अर्थ विनम्रता और आवश्यकता के प्रति चेतना है। "माँगने" शब्द का अर्थ है जैसे कि एक बच्चा अपने पिता से माँगता है या एक सेवक अपने मालिक से माँगता है। याकूब 4:2 सिखाता है कि जो लोग माँगते नहीं, उन्हें कुछ मिलता भी नहीं है। लूका 18 में, फरीसी कुछ नहीं माँगता। उसे भी कुछ नहीं मिलता है! माँगने के बजाय, वह परमेश्वर को बताता है कि वह कितना भला है। लेकिन चुंगी लेनेवाले ने परमेश्वर से अपने लिये दया को माँगा। उस व्यक्तिगत परमेश्वर से माँगने में विश्वास रखना जिसके साथ वह व्यक्ति संगति करता हो। जब वह माँगता है, तो वह बदले में उसके उत्तर की आशा भी रखता है। और यह परमेश्वर पर विश्वास होने को दर्शाता है जो कुछ भी कर सकता है, और वह करता है और उत्तर भी देगा।

ढूँढ़ने का अर्थ है माँगना और साथ ही साथ कार्य भी करना। "ढूँढ़ने" का अर्थ है, प्राप्त करने के लिए ढूँढ़ना, खोजने के लिये ढूँढ़ना, पाने के लिये इच्छुक होना। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति बाइबल को समझने के लिए प्रार्थना करता है, तो उसे स्वयं बाइबल का अध्ययन करना चाहिए, अन्य मसीहियों से मिलकर बाइबल पर चर्चा करनी चाहिए और बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार जीवन को व्यतीत करने का प्रयास करना चाहिए। या जब कोई व्यक्ति किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता है, तो उसे इस व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार सहायता करने की इच्छा रखनी चाहिए और इस बात को देखना चाहिए कि इस व्यक्ति के लिए किस प्रकार की सहायता सबसे उपयुक्त होगी, इसे वास्तविक रूप से क्या सहायता मिल सकती है और इसके बारे में कुछ करे।

खटखटाने का अर्थ है माँगना और कार्य करने के साथ–साथ आग्रह करना। "खटखटाने" शब्द का अर्थ है कि व्यक्ति दरवाज़ा खोलने तक खटखटाता रहता है। इसका अर्थ यह है कि जब तक उसे कोई जवाब नहीं दिया जाता, तब तक वह आग्रह करते हुए खटखटाता रहता है। सभी तीनों क्रियाएँ निरन्तर वर्तमान काल में हैं और इसका अर्थ है कि आग्रह तीनों क्रियाओं में निहित है : निरन्तर "माँगते रहो!" "ढूँढ़ते रहो!" "खटखटाते रहो!"

तीनों आग्रहों के बाद तीन वायदे होते हैं। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर द्वारा ठहराई गई बातों को पूरा करता है, तो परमेश्वर अपने द्वारा किये गये वायदों को पूरा करता है। जो कोई माँगेगा उसे मिलेगा। जो कोई ढूँढ़ेगा वह पाएगा। जो कोई खटखटायेगा, उसके लिए दरवाज़ा खोला जाएगा। परमेश्वर का वायदा है कि एक भी मसीही जन निराश नहीं होगा! इस समय पर, यीशु माँगने वाले पुत्र के दृष्टान्त के विषय में बताते हैं।

(2) **दृष्टान्त की कहानी मत्ती 7:9–10 में लिखी हुई है।**

(3) **इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग मत्ती 7:11–12 में दिया गया है।**

यदि सांसारिक पिता भी, जो स्वभाव से पापी और निर्बल हैं, अपने बच्चों को केवल अच्छी और ऐसी वस्तुएँ जिनसे उन्हें हानि न पहुँचे, देना जानते हैं, तो हमारा स्वर्गीय पिता हमें अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा? लूका 11:13 में, यीशु ने कहा, हमारा स्वर्गीय पिता अपने माँगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा? एक ही दृष्टान्त के इन दो अनुप्रयोगों के बीच कोई मतभेद नहीं है, क्योंकि पवित्र आत्मा पृथ्वी पर हर अच्छे वरदान का स्रोत है (याकूब 1:17)!

---

3. **दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।**

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

पिता और उसका पुत्र। अनुप्रयोग में, यह स्पष्ट है कि यहाँ पिता और पुत्र, परमेश्वर पिता और एक मसीही जन को दर्शाते हैं। लेकिन इनकी तुलना एकदम समान नहीं है। जबकि सांसारिक पिता पापी और निर्बल हैं, परमेश्वर पिता, पवित्र और सर्वशक्तिमान है!

रोटी और मछली। ये "अच्छी बातों" को दर्शाते हैं जो परमेश्वर पिता मसीही जन को प्रार्थना के द्वारा देते हैं।

पत्थर और एक सांप। ये "बुरी वस्तुओं" को दर्शाते हैं जो कि परमेश्वर पिता एक मसीही जन को कभी नहीं देंगे!

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है।* इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 7:7-12 में माँगने वाले पुत्र का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में स्पष्ट और निरन्तर प्रार्थना" के विषय में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार से है। "जब स्वर्गीय पिता परमेश्वर की सन्तानें उससे प्रार्थना करती हैं, तब वह अपनी किसी भी सन्तान को निराश नहीं होने देंगे। वह प्रत्येक उस प्रार्थना का उत्तर देंगे जिसमें माँगना और खटखटाना शामिल हो, यानि जो विश्वास से काम करता है और जो आग्रह करता रहता है।"

परमेश्वर पिता प्रार्थना करने वाली अपनी सन्तानों को कभी निराश नहीं होने देंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर पिता हमेशा अपनी सन्तानों को वह सबकुछ दे देंगे, जो कुछ भी वह उससे माँगेगे। इसका मतलब यह है कि वह उन्हें ऐसा कुछ नहीं देंगे जो उनके लिए बुरा हो। वह उन्हें पवित्र आत्मा और पवित्र आत्मा के सभी वरदान देंगे। वह उन्हें आवश्यकतानुसार रूपान्तरित करेंगे, वह उन्हें आत्मा का फल देंगे जो उनके स्वभाव को बदल देगा (गलातियों 5:22-23), वह उन्हें आत्मा का ज्ञान देंगे, जिससे उनके शत्रु उनका सामना नहीं कर सकेंगे (मत्ती 10:19-20; प्रेरितों के काम 6:10), और वह उनके लिए दरवाज़ों को खोलेंगे, जिसे कोई भी व्यक्ति बन्द नहीं कर पाएगा (प्रकाशितवाक्य 3:7-8)। परमेश्वर पिता अपनी सन्तानों से प्रेम और उनकी देखभाल करते हैं, लेकिन वह चाहते हैं कि उनकी सन्तानें उन्हीं वस्तुओं को उनसे माँगे जिनकी उन्हें आवश्यकता हो।

प्रार्थना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य में सच्चे लोग कार्य करते समय प्रार्थना करते हैं, और वे यह कार्य आग्रह के साथ करते हैं।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

लूका 11:5-10 के "मध्स्थता करने वाले मित्र" और लूका 18:1-8 के "निरन्तर आग्रह करने वाली विधवा" के दृष्टान्तों को नियमावली 11 के अध्याय 29 में देंखे।
